Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H.D. Jain College, Ara
M.A semester - 1 Philosophy CC-01
Indian Epistemology & Logic

" अनिर्वचनीय ख्यातिवाद "

2020 WEEK 43 OCTOBER FRIDAY 23 297-69

(5) यह मत अद्वैतवादियों का है। अद्वैतवेदान्त के प्रतिपादक आदि शंकराचार्य ने 'अनिर्वचनीय ख्यातिवाद' के नाम से बोध अथवा भ्रम विषयक किसी सिद्धान्त का प्रतिपादन नहीं किया, किन्तु परवर्ती वेदान्तियों ने शंकराचार्य के अध्यास भाष्य, जगत विचार और मायावाद के आधार पर बोध विषयक इस मत का निरूपण किया। शंकराचार्य के अनुसार समस्त जगत ही एक व्यापक भ्रम है जो माया अथवा अविद्या के कारण उदित है। ब्रह्म की निराकार अद्वय सत्ता है जिसका जगत रूप में अध्यास भावरूप अज्ञान के कारण होता है। माया के दो कार्य हैं — आवरण और विक्षेप। आवरण शक्ति के द्वारा माया ब्रह्म के यथार्थ सच्चिदानन्द स्वरूप को आवृत करती है तथा विक्षेप के द्वारा साकार जगत का अध्यास इस निराकार ब्रह्म में होता है। इसी प्रकार उत्तर वेदान्ती शंकराचार्य के तात्विक मत का ज्ञानमीमांसीय निरूपण अनिर्वचनीय ख्यातिवाद के रूप में करते हैं।

वेदान्त मत साक्षी चैतन्य और वृत्ति चैतन्य में भेद करता है। वेदान्त मत के अनुसार, यह आत्मा ही ब्रह्म है जो अपने मूल रूप में ज्ञान स्वरूप है। ज्ञानमीमांसीय दृष्टि से यह ज्ञान स्वरूप आत्मा ही ब्रह्म है जो अपने

मूल रूप में ज्ञान स्वरूप है। ज्ञानमीमांसीय दृष्टि से यह ज्ञानस्वरूप आत्मा ही साक्षी चैतन्य है। समस्त जगत इस आत्मा का ही अध्यास है। यही आत्मा जब बाह्यवस्तु के रूप में भासित होती है तो इसे चैतन्य को वृत्ति चैतन्य कहा जाता है। शब्दान्तर से ज्ञाता रूप में आत्मा साक्षी चैतन्य है और ज्ञानरूप में वृत्ति चैतन्य है। इस प्रकार के वेदान्त मतानुसार जगत और ज्ञेय में कोई तात्विक भेद नहीं। ज्ञान में यह वृत्ति चैतन्य ही बाह्य वस्तु का रूप धरता है। इस रूप में चैतन्य के तीन रूप हैं — (1) प्रमाता चैतन्य अथवा विषयी या ज्ञाता (2) विषय चैतन्य अथवा ज्ञेय अथवा ज्ञान की विषय-वस्तु तथा (3) प्रमाण चैतन्य अथवा ज्ञान का साधन। ज्ञान मीमांसीय अथवा व्यावहारिक रूप से ये तीनों पृथक-पृथक प्रतीत होने पर भी एक ही हैं। इस प्रकार वेदान्त ज्ञान मीमांसा त्रिपुटि ज्ञान की बात करती है, अर्थात विषयी विषय और प्रमाण इन तीनों के मूल अखंड रूप से ही ज्ञान संभव है। प्रत्यक्ष ज्ञान में ज्ञाता ही वस्तु का रूप धरता है। इस प्रकार प्रत्यक्ष में ज्ञेय वस्तु का बोध ज्ञाता को होता है, क्योंकि यथार्थतः वह स्वयं ज्ञाता ही है।

में वेदान्ती पुनः अपनी ज्ञानमीमांसा विषयक मत के अनुसार स्वतः प्रामाण्यवादी है अर्थात् प्रत्येक ज्ञान अपने स्वरूप में यथार्थ ही होता है किन्तु बाह्य कारणों से अयथार्थ भ्रान्ति उत्पन्न होती है।

भ्रम की व्याख्या करते हुए वेदान्ती कहते हैं कि भ्रम बाह्य कारणों यथा इन्द्रियादि दोष से उत्पन्न होता है। शुक्ति रजत के ज्ञान में इन्द्रिय दोष से उत्पन्न अज्ञान द्वारा शुक्ति का यथार्थ स्वरूप आवृत्त होता है तथा ज्ञान अनावृत्त अधिष्ठान पर स्मृति में उपस्थित रजत का विक्षेप होता है। इस प्रकार आवरण और विक्षेप के द्वारा शुक्ति रूपी अधिष्ठान में रजत रूपी बोध का अध्यास होता है।

शुक्ति रजत में 'इदम् रजतम्' रूप जो बोध ज्ञाता के सम्मुख उपस्थित होता है उसकी विवेचना करते हुए वेदान्ती कहते हैं कि इस 'इदम् रजतम्' को रजत ज्ञानमीमांसीय रूप में अनिर्वचनीय है क्योंकि वह चतुष्कोटि से ऊपर है। यहाँ रजत के बोध को यथार्थ नहीं कहा जा सकता क्योंकि यह परवर्ती ज्ञान के द्वारा खण्डित होता है। यह रजत अयथार्थ भी नहीं है क्योंकि अयथार्थ अथवा असत् किसी भी बोध को उत्पन्न नहीं

कर सकता। पुनः इसे रजत का रूकही साथ सत और असत दोनों होना संभव नहीं क्योंकि इसमें व्याघात का दोष उत्पन्न होगा। पुनः यह न सत तथा न असत भी नहीं हो सकता क्योंकि यह भी व्याघात ही है। इसप्रकार चतुष्कोटि से उपर होने के कारण रजत का यह बोध अनिर्वचनीय है।

इसीरूप में 'स्वप्न' का बोध भी यहाँ अनिर्वचनीय ही है। क्योंकि वह भी चतुष्कोटि से ऊपर है। यह स्वप्न आकाश कुसुम की भाँति असत नहीं है क्योंकि यह आधिष्ठान रहित नहीं है। यह बोध सत भी नहीं है क्योंकि यह 'विपरीत ज्ञान' नहीं है। पुनः यह सत और असत दोनों भी नहीं है। यह बोध सत भी नहीं है क्योंकि यह विपरीत ज्ञान नहीं है। पुनः यह सत और असत दोनों नहीं है क्योंकि इससे व्याघात उत्पन्न होगा तथा इसी कारण से यह न सत और न असत भी नहीं कहा जा सकता।

इस रूप में वेदान्त ज्ञानमीमांसा के अनुसार 'स्वप्न' रजतम का ज्ञान अनिर्वचनीय है। पद्मपाद ने पंचपादिका में मिथ्यात्व को अनिर्वचनीय

Appointments/Meetings

पद के द्वारा ही निरूपित किया है।
इससे यह ~~[illegible]~~ निष्कर्ष सहज-प्रसूत
है कि वेदान्त मत जिस बोध को
अनिर्वचनीय कहता है, वह बोध भी
प्रकारान्तर से "मिथ्या" ही है। इसरूप में
वेदान्त मतानुसार, शुक्ति - रजत का
बोध भी मिथ्या है। किन्तु यह मिथ्यात्व
आकाश - कुसुम अथवा वंध्यामाता की
तरह मिथ्या नहीं है।